28.2.72

अव्यक्त बापदादा के साथ बच्चों की मुलाकात

जैसे परीक्षा का समय नजदीक आता जा रहा है तो अपने सम्पूर्ण स्थिति का भी प्रत्यक्ष साक्षात्कार वा अनुभव प्रत्यक्ष रुप में होता जाता है? जैसे नम्बरवन आत्मा अपने सम्पूर्ण स्टेज का चलते फिरते प्रैक्टिकल रुप में अनुभव करते थे वैसे आप लोगों को अपनी सम्पूर्ण स्टेज बिल्कुल समीप और स्पष्ट अनुभव होते हैं? जैसे पुरुषार्थी ब्रह्मा और सम्पूर्ण ब्रह्मा दोनो ही स्टेज स्पष्ट थी ना। वैसे आप लोग को अपने सम्पूर्ण स्टेज इतनी स्पष्ट और समीप अनुभव होते हैं। अभी अभी यह स्टेज है, फिर अभी अभी वह होंगी यह अनुभव होता है। जैसे साकार में भविष्य का भी अभी अभी अनुभव होता था ना। भल कितना भी कार्य में तत्पर रहते हैं लेकिन अपने सामने सदैव सम्पूर्ण स्टेज होनी चाहिए कि उस स्टेज पर बस पहुँचे कि पहुँचे। जब आप सम्पूर्ण स्टेज को समीप लावेंगे तो वैसे ही समय भी समीप आवेगा। समय आपको समीप लावेगा। वा आप समय को समीप लावेंगी। क्या होना है? उस तरफ से समय समीप आवेगा, इस तरफ से आप समीप होंगे। दोनो का मेल होगा। समय कब भी आये लेकिन स्वयं को सदैव सम्पूर्ण स्टेज के समीप लाने के पुरुषार्थ में ऐसा तैयार रखना चाहिए जो समय की इन्तजार आपको न करनी पड़े। पुरुषार्थी को सदैव एवर रेडी रहना है। किसको इन्तजार न करना पड़े। अपना पूरा इन्तजाम होना चाहिए। हम समय को समीप लावेंगे न कि समय हमको समीप लावेगा। नशा यह होना चाहिए। जितना अपने सामने सम्पूर्ण स्टेज समीप होती जावेंगी उतनी विश्व की आत्माओं के आगे आप अन्तिम कर्मातीत स्टेज का साक्षात्कार स्पष्ट होता जावेगा। इससे जज कर सकते हो कि साक्षात्कार मूर्त बन विश्व के आगे साक्षा-त्कार कराने का समय नजदीक है वा नहीं। समय तो बहुत जल्दी जल्दी दौर लगा रहा है। 10 वर्ष कहते कहते 24 वर्ष तक पहुँच गये हैं। समय की रफतार अनुभव से तेज तो अनुभव होती है ना। इस हिसाब से अपनी सम्पूर्ण स्टेज भी स्पष्ट और समीप होने चाहिए। जैसे स्कूल में भी स्टेज होती है तो सामने देखते ही समझते हैं कि इस पर पहुँचना है। इसी प्रमाण सम्पूर्ण स्टेज भी ऐसे सहज अनुभव होने चाहिए। इसमें क्या चार वर्ष लगेंगे वा 4 सेकेण्ड? है तो सेकेण्ड की बात। अब सेकेण्ड में समीप लाने की स्कीम बनाओ। वा प्लैन बनाओ। प्लान बनाने में भी टाईम लग जावेगा लेकिन उस स्टेज पर उपस्थित हो जाये तो समय नहीं लगेंगा। प्रत्यक्षता समीप आ रही है। यह तो समझते हो। वायुमंडल और वृत्तियां परिवर्तन में

आ रही है। इससे भी समझना चाहिए कि प्रत्यक्षता का समय कितना जल्दी जल्दी आगे आ रहा है। मुश्किल बात सरल होती जा रही है। संकल्प तो सिध्ध होते जा रहे हैं। निर्भयता और संकल्प में दृढ़ता यह है सम्पूर्ण स्टेज के समीप की निशानी। यह दोनो ही दिखाई दे रहे हैं। संकल्प के साथ साथ आपकी रिजल्ट भी स्पष्ट दिखाई दे। इसके साथ साथ फल की प्राप्ति भी स्पष्ट दिखाई दे। यह संकल्प है यह इसकी रिजल्ट। यह कर्म है यह इनका फल। ऐसा अनुभव होता है। इसको ही प्रत्यक्ष फल कहा जाता है। अच्छा! ओम् शान्ति

जैसे बाप के तीन रुप प्रसिद्ध है, वैसे अपने तीनों रुपों का साक्षात्कार होता रहता है? जैसे बाप को अपने तीनों रुपों की स्मृति रहती है, ऐसे ही चलते फिरते अपनी तीनों रुपों की स्मृति रहे कि हम मास्टर त्रिमूर्ति हैं। तीनों कर्तव्य इक्कठे साथ साथ चलनी चाहिए। ऐसे नहीं—स्थापना का कर्तव्य करने का समय अलग है, विनाश का कर्तव्य का समय अलग है फिर और आना है। नहीं। नई रचना रचते जाते हैं और पुरानी का विनाश। आसुरी संस्कार वा जो भी कमजोरियाँ हैं उनका विनाश भी साथ साथ करते जाना है। नये संस्कार ला रहे हैं, पुराने संस्कार खत्म कर रहे हैं। तो सम्पूर्ण और शक्ति रुप विनाशकारी रुप न होने कारण सफलता न हो पाती है। दोनो ही साथ होने से सफलता हो जाती है। यह दो रुप याद रहने से देवता रुप आपे ही आवेंगा। दोनो रुप के स्मृति को ही फाईनल पुरुषार्थ की स्टेज कहेंगे। अभी अभी ब्राह्मण रुप अभी अभी शक्ति रुप। जिस समय जिस रुप की आवश्यकता है उस समय वैसा ही रुप धारण कर कर्तव्य में लग जाये। ऐसी प्रैक्टीस चाहिए। वह प्रैक्टिस तब हो सकेंगी जब एक सेकेण्ड में देहीअभिमानी बनने का अभ्यास होगा। अपनी बुद्धि को जहाँ चाहें वहाँ लगा सके। यह प्रैक्टिस बहुत जरुरी है। ऐसे अभ्यासी सभी कार्य में सफल होते हैं। जिसको अपने को मोल्ड करने की शक्ति है वही समझो रीयल गोल्ड है। जैसे स्थूल कर्मेन्द्रियों को जहाँ चाहे मोड़ सकते हो ना। अगर नहीं मुड़ती तो इसको बिमारी समझती हो। बुद्धि को भी ऐसे इजी मोड़ सके। ऐसे नहीं कि बुद्धि हमको मोड़ ले जाये। ऐसे सम्पूर्ण स्टेज का यादगार भी गाया हुआ है। दिन प्रति दिन अपने में परिवर्तन का अनुभव तो होता है ना। संस्कार वा स्वभाव वा कमी को देखते हैं तब नीचे आ जाते तो अब दिन प्रति दिन यह परिवर्तन लाना है। कोई का भी स्वभाव संस्कार देखते हुए जानते हुए उस तरफ बुद्धियोग न जाये। और ही उस आत्मा के प्रति शुभ भावना हो। एक तरफ से सुना दूसरे तरफ से खत्म।